बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-1

MODEL PAPER - I

कुल प्रश्नों की संख्या : ४० + १० + ५ = ५५

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : २४

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : ३ घंटे १५ मिनट] [पूर्णांक : १००

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-**I** : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या १ से ४० तक प्रत्येक १ अंक का है।

भाग-**II** : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग- II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी १० प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ३ अंक का है। भाग- II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ६ अंक का है।

Instructions **:**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - I

भाग–I

Section - I

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी ४० प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें : $40 \times 1 = 40$

Answer all the questions. Answer each questions by Selecting the correct answer : $40 \times 1 = 40$

1. बौद्ध दर्शन के प्रवर्तक हैं :

(a) गौतम बुद्ध (b) कपिल

(c) महावीर (d) नागसेन

Founder of the Buddhist Philosophy is:

(a) Gautam Buddh (b) Kapil

(c) Mahavir (d) Nagsen

2. योग दर्शन के प्रवर्तक हैं :

(a) गौतम (b) पतंजलि

(c) शंकर (d) रामदेव

Founder of Yoga Philosophy is:

(a) Gautam (b) Patanjali

(c) Shankar (d) Ramdev

3. सत्व, रजस, तमस ये कहाँ रहते हैं :

(a) प्रकृति (b) पुरुष

(c) दोनों में (d) इनमें से कोई नहीं

Where do Satva, Rajas, Tamas reside:

(a) Prakriti (b) Purusha

(c) Both (d) None of these

4. किसके अन्तिम भाग को उपनिषद् कहते हैं ?

(a) पुराण (b) ज्ञान

(c) वेद (d) इनमें से कोई नहीं

Upanishad is the last part of:

(a) Purana (b) Knowledge

(c) Veda (d) None of these

5. निम्न में कौन नास्तिक दर्शन हैं :

(a) चार्वाक (b) बौद्ध

(c) जैन (d) उपरोक्त सभी

Which of the following Heterodox

(a) Charvak (b) Buddha

(c) Jain (d) All of these

6. 'ऋत' संबंधित है :

(a) नैतिकता से (b) राजनीति से

(c) तर्कशास्त्र (d) इनमें से सभी

'Rta' is related to

(a) Morality (b) Politics

(c) Logic (d) All of these

7. यथार्थ ज्ञान कहलाता है :

(a) प्रमा (b) अप्रमा

(c) प्रमाण (d) इनमें से कोई नहीं

Real knowledge is called :

(a) Prama (b) Aprama

(c) Pramana (d) None of these

8. कौन प्रथम तीर्थंकर हैं ?

(a) पार्श्वनाथ (b) महावीर

(c) आदिनाथ (d) गौतम

Who is the first Tirthankara ?

(a) Parshvanath (b) Mahavir

(c) Adinath (d) Gautam

9. शंकर का सिद्धांत है ?

(a) विशिष्टाद्वैत (b) निरपेक्षवाद

(c) अद्वैत (d) इनमें से कोई नहीं

Theory of Shankara is

(a) Vishishtadvaita (b) Nirapakeshavada

(c) Advaita (d) None of these

10. भारतीय दर्शन है :

(a) व्यावहारिक (b) अव्यवहारिक

(c) परिकल्पनात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

Indian Philosophy is -

(a) Practical (b) Impractical

(c) Hypothetical (d) None of these

11. भारतीय दर्शन के दो सम्प्रदाय हैं :

(a) प्राकृतिक और अप्राकृतिक (b) भौतिकवादी और अध्यात्मवादी

(c) आस्तिक और नास्तिक (d) इनमें से कोई नहीं

Two Schools of Indian Philosophy are

(a) Natural and Unnatural (b) Materialistic and Idealistic

(c) Orthodox and Heterodox (d) None of these

12. किसने कहा कि मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदंड हैं ?

(a) अरस्तु (b) प्लेटो

(c) सोफिस्ट (d) बेन

Who said that man is the measure of all things

(a) Aristotle (b) Plato

(c) Sophists (d) Ben

13. जैन किसकी उपासना करते थे ?

(a) ईश्वर की (b) आत्मा की

(c) तीर्थंकर की (d) ब्रह्म की

Who is worshipped by the Jainas?

(a) God (b) Soul

(c) Tirthankaras (d) Brahma

14. इनमें से कौन बुद्धिवादी हैं :

(a) देकार्त (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) लॉक

Who among the following is a rationalist?

(a) Descartes (b) Berkley

(c) Hume (d) Locke

15. जैन मत के अनुसर त्रिरत्न हैं :

(a) सम्यक् दर्शन (b) सम्यक् चरित्र

(c) सम्यक् ज्ञान (d) उपरोक्त सभी

Triratnas according to the Jainas, are-

(a) Right vision (b) Right conduct

(c) Right knowledge (d) All the these

16. स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य हैं-

(a) आत्मा (b) ईश्वर

(c) जड़ तत्व (d) इनमें से कोई नहीं

According to Spinoza, substance is -

(a) Soul (b) God

(c) Matter (d) None of these

17. कारण कार्य नियम है-

(a) दार्शनिक (b) वैज्ञानिक

(c) सामान्य (d) इनमें से कोई नहीं

The law of Causation is -

(a) Phiolosophical (b) Scientific

(c) General (d) All of these

18. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक है-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of the Subjective Idealism is-

(a) Plato (b) Berkley

(c) Hegal (d) None of them

19. निम्न में कौन अभाव का प्रकार है ?

(a) संसर्गभाव (b) अन्योन्यावाभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is a type of non-existances

(a) Sansargabhava (b) Anyonyabhava

(c) Both a & b (d) None of the above

20. नीतिशास्त्र एवं समाज दर्शन के बीच सम्बन्ध है-

(a) घनिष्ठ (b) विरोधात्मक

(c) घनिष्ठ एवं विरोधात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

The relationship between Ethics and Social Philosophy is-

(a) Close (b) Contrary

(c) Both close & contrary (d) None of these

21. 'कर्मण्येवाधिरस्ते मा फलेषु कदाचन्' यह किस ग्रन्थ का वचन है-

(a) गीता (b) ब्रह्मसूत्र

(c) कठ उपनिषद् (d) मनुस्मृति

The Scripture that asserts 'Karmanyevadhikaraste ma phaleshu kadachan' is-

(a) The Gita (b) Brahmasutra

(c) Kathopnisada (d) Mansmrti

22. गीता में स्वधर्म का अर्थ है-

(a) सामान्य धर्म (b) राजधर्म

(c) युग धर्म (d) वर्ण धर्म

The meaning of Swadharma is-

(a) General duty (b) Rajadharma

(c) Yugdharama (d) Varna Dharma

23. आत्मा की सत्यता के लिए निम्न में से कौन सही है-

(a) व्यावहारिक (b) पारमार्थिक

(c) प्रतिभाषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is the truth of Soul

(a) Practical (b) Parmarthika

(c) Pratibhasika (d) None of these

24. भारतीय दर्शन नहीं है-

(a) निराशावादी (b) अध्यात्मवादी

(c) प्राकृतिक (d) इनमें से कोई नहीं

Indian knowledge is not-

(a) Pessimistic (b) Spiritual

(c) Natural (d) None of these

25. सांख्यकारिका के रचयिता हैं-

(a) कपिल (b) कनाद

(c) गौतम (d) ईश्वर कृष्ण

Sankhya Karika is written by-

(a) Kapil (b) Kanada

(c) Gautam (d) Isvarkrishna

26. बुद्ध के अनुसर त्रिरत्न क्या है ?

(a) शील (b) समाधि

(c) प्रज्ञा (d) इनमें से कोई नहीं

What is Tri-Ratna according to the Buddha-

(a) Sila (b) Samadhi

(c) Prajna (d) All of the these

27. सांख्य दर्शन है :

(a) एकवादी (b) द्वैतवादी

(c) अनेकवादी (d) इनमें से कोई नहीं

Sankhaya Philosophy is-

(a) Monistic (b) Dualistic

(c) Polythestic (d) None of these

28. शंकराचार्य द्वारा रचित ग्रन्थ है-

(a) ब्रह्म सूत्र (b) सांख्यकारिका

(c) योग सूत्र (d) श्रीभाष्य

The book written by Shankaracharya-

(a) Brahma Sutra (b) Sankhya Karika

(c) Yogasutra (d) Sribhasya

29. न्याय दर्शन है-

(a) प्रत्ययवादी (b) प्रयोजनवादी

(c) वस्तुवादी (d) संशयवादी

Nyaya Philosophy is-

(a) Idealist (b) Teleological

(c) Realistic (d) Sceptic

30. इनमें से कौन जैन सम्प्रदाय है-

(a) हीनयान (b) महायान

(c) श्वेताम्बर (d) इनमें से सभी

Which of the following belongs to the Jaina school?

(a) Hinayana (b) Mahayana

(c) Swetambara (d) All of these

31. शंकराचार्य के अनुसार जगत् है-

(a) पारमार्थिक सत्य (b) व्यावहारिक सत्य

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The World according to Shankaracharya is-

(a) Transcendental (b) Practical

(c) Both (d) None of these

32. मोक्ष के लिये निर्वाण शब्द किस दर्शन में प्रयुक्त हुआ है-

(a) सांख्य (b) मीमांसा

(c) बौद्ध (d) जैन

Which philosophy uses the term 'Nirvana' for liberation?

(a) Sankhya (b) Mimansa

(c) Buddhism (d) Jaina

33. पुरुषार्थ हैं-

(a) दो (b) तीन

(c) चार (d) इनमें से कोई नहीं

The types of Purushartha :

(a) Two (b) Three

(c) Four (d) None of these

34. उपनिषदों का सार है-

(a) रामायण (b) गीता

(c) महाभारत (d) इनमें से कोई नहीं

The essence of the Upanisadas-

(a) The Ramayana (b) The Gita

(c) The Mahabharata (d) None of these

35. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के समर्थक हैं-

(a) प्लेटो (b) बर्कले

(c) हीगेल (d) इनमें से कोई नहीं

The supporter of Subjective Idealism-

(b)Plato (b) Berkeley

(c) Hegal (d) None of these

36. फिलॉसफी का अर्थ है-

(a) नियमों का आविष्कार (b) ज्ञान के प्रति प्रेम

(c) ज्ञान के प्रति अरूचि (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Philosophy is-

(a) Invention of Laws (b) Love for knowledge

(c) Non-interest to knowledge (d) None of these

37. शंकर के अनुसार सत्-चित्-आनंद कौन हैं?

(a) ईश्वर (b) माया

(c) ब्रह्म (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is Sat-Cit-Anand according to Sankar

(a) God (b) Maya

(c) Brahma (d) None of these

38. आस्तिक दर्शन की संख्या है-

(a) आठ (b) छः

(c) तीन (d) पाँच

The number of Orthodox Philosophy is-

(a) Eight (b) Six

(c) Three (d) Five

39. पर्यावरणीय नीतिशास्त्र है-

(a) मनुष्य केन्द्रित (b) जीवन केन्द्रित

(c) पशु केन्द्रित (d) इनमें से कोई नहीं

Environmental Ethics is-

(a) Man-centric (b) Life-centric

(c) Animal centric (d) None of these

40. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र को कहते हैं-

(a) व्यावहारिक नीतिशास्त्र (b) अधिनीतिशास्त्र

(c) आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (d) उपर्युक्त सभी

Applied Ethics is called-

(a) Practical ethics (b) Meta ethics

(c) Idealistic ethics (d) All of the above.

भाग-**II**

Section - II

(गैर-वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

(Non-Objective Type Questions)

खण्ड-ब

Group - B

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. दर्शन का शाब्दिक अर्थ क्या है?
   What is the Literal meaning of the term 'Darsan'?
2. भारतीय दर्शन में कितने नास्तिक सम्प्रदाय हैं ? उनके बतायें।
   How many schools are there in Heterodox Indian Phiolosophy? Specify their names.
3. आसक्त कर्म का क्या अर्थ है ?
   What is the meaning of Aasakta Karma ?
4. बौद्ध दर्शन में सम्यक् दृष्टि का क्या अर्थ है?
   What is the meaning of Samyak Drishti or Right Vision in the Buddhist philosophy ?
5. पंच स्कन्ध कौन-कौन से हैं?
   Specify Panch Skandha.
6. ज्ञान मीमांसा सिद्धांत के रूप में बुद्धिवाद को परिभाषित करें।
   Define Rationalism as an Epistemological Theory.
7. जी.ई. मूर ने 'शुभ' के बारे में क्या मत दिया है ?
   What position has been taken by G.E. Moore regarding the concept of 'Good'?
8. अरस्तु के अनुसार कारण कितने प्रकार के होते हैं?
   How many kinds of causes are accepted by Aristotle?
9. चिकित्सा नीतिशास्त्र के आदर्शों का परिचय दीजिय।
   Show your acquaintance with the ideals of medical ethics.
10. व्यावसायिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत सभी प्रकार के व्यापार का आधार क्या है?
    What is/are the ground (s) of all business in Professional Ethics?

खण्ड-स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. पुरुषार्थ क्या है? स्पष्ट कीजिए।
    What is Purushartha ? Explain
12. बुद्ध का 'द्वितीय आर्यसत्य' क्या है? स्पष्ट करें।
    What is the 'Second Noble Truth' of Buddha ? Explain
13. अद्वैत वेदांत में ब्रह्म की अवधारणा क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
    What is the concept of Brahma in Advaita Vedanta ? Explain
14. अरस्तु का चतुष्कोटि कारणतावाद का सिद्धांत स्पष्ट कीजिए?
    Explain Aristotle's fourfold causation?
15. मानसिक पर्यावरण क्या है? बताइए।
    What is mental environment? Explain.

-ANSWER-

1. (a)	2. (b)	3. (a)	4. (c)	5. (d)	6. (a)
7. (a)	8. (a)	9. (c)	10. (a)	11. (c)	12. (c)
13. (c)	14. (a)	15. (d)	16. (b)	17. (d)	18. (b)
19. (c)	20. (a)	21. (a)	22. (d)	23. (b)	24. (a)
25. (d)	26. (d)	27. (b)	28. (a)	29. (a)	30. (c)
31. (b)	32. (c)	33. (c)	34. (b)	35. (b)	36. (b)
37. (c)	38. (b)	39. (b)	40. (a)		

-ANSWER-

1. दर्शन शब्द 'दृश' धातु से उत्पन्न है। इस कारण तथा दृश्यते अनेन इति दर्शनम् के आधार पर दर्शन का शाब्दिक अर्थ है- देखना, जिसके द्वारा देखा जाय या जिसमें देखा जाए।
2. भारतीय दर्शन में तीन (३) नास्तिक सम्प्रदाय हैं-चार्वाक, जैन तथा बौद्ध।
3. आसक्त कर्म वह है जिसमें फल की आशा निहित रहती है।
4. वस्तुओं की अनित्यता का बोध, बौद्ध दर्शन में सम्यक् दृष्टि कहलाती है।
5. पंच स्कन्ध निम्नवत् हैं- रूप स्कन्ध, संज्ञा स्कन्ध, वेदना स्कन्ध, संस्कार स्कन्ध तथा विज्ञान स्कन्ध।
6. बुद्धिवाद एक ज्ञान मीमांसीय सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है।
7. बीसवीं शताब्दी के दार्शनिक जी.ई.मूर के अनुसार शुभ अपरिभाष्य है, अर्थात शुभ की परिभाषा नहीं दी जा सकती।
8. अरस्तु के अनुसार कारण चार प्रकार के होते हैं- (i) उपादान कारण (ii) निमित्त कारण (iii) आकारिक कारण (iv) अन्तिम कारण
9. मानव-कल्याण तथा मानव सेवा चिकित्सा नीतिशास्त्र के आदर्श हैं।
10. व्यावसायिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत सभी प्रकार के व्यापार के आधार हैं-ईमानदारी, सच्चाई, सहमति और लाभ।
11. पुरुषार्थ शब्द दो शब्दों के मेल से बना है- पुरुष और अर्थ। इसलिए पुरुषार्थ वह है जो पुरुष के लिए आवश्यक है एवं लाभदायक है। अतः व्यक्ति के कर्मों के लक्ष्य को ही पुरुषार्थ कहा जाता है। जिनके लिए मनुष्य चेष्टाएँ करता है, वे ही उसके पुरुषार्थ हैं। भारतीय विचारकों ने ऐसे चार आदर्श या साध्य बताए हैं, जो मनुष्य के इहलोक और परलोक दोनों के प्रधानलक्ष्य बन जाते हैं। इन्हीं चारों आदर्शों से प्रेरित होकर मनुष्य के सभी कार्य होते हैं। चार पुरुषार्थ हैं- धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष।

    धर्म से यहाँ मनुष्य के उन सभी कर्तव्यों का बोध होता है जिन्हें शास्त्रों ने सभी मानवीय क्षेत्रों को ध्यान में रखकर निर्धारित किया है। जीवन के सभी क्षेत्रों में कर्तव्यों का समुचित पालन करनेवाला व्यक्ति ही सच्चा धार्मिक व्यक्ति है। यह मोक्ष प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारतीय विचारक अर्थ की महत्ता स्वीकार करते हैं लेकिन इसे परमसाध्य नहीं मानते। यह मोक्ष का केवल एक साधन है। काम को दो अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है- सामान्य अर्थ और विशेष अर्थ। सामान्य अर्थ में अनुभवजन्य सुख काम है और विशेष अर्थ में यह लैंगिक क्रिया है। मोक्ष अन्तिम पुरुषार्थ है। यह एक ऐसी अवस्था है जहाँ दुःखों का पूर्ण अभाव रहता है। संसार के बन्धनों से छुटकारे की इच्छा ही मोक्ष पुरुषार्थ है। धर्म और अर्थ आदर्श जीवन की दृष्टि से चरम लक्ष्य हैं। भारतीय विचारक मोक्ष को सर्वोच्च आदर्श मानते हैं।
12. बुद्ध के द्वितीय आर्यसत्य में दुःख की उत्पत्ति पर विचार किया गया है। प्रत्येक घटना का कोई कारण अवश्य होता है। दुःख भी एक घटना का कार्य है। इसलिए इसका भी कोई कारण अवश्य होना चाहिए। प्रायः सभी भारतीय विचारकों ने अज्ञान को ही दुःख का मूल कारण बताया है। बौद्ध दर्शन में दुःख की उत्पत्ति का सिद्धांत बौद्धों के 'प्रतीत्यसमुत्पाद' अर्थात् कार्यकारण सिद्धांत पर आधृत है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों के योग से बना है- 'प्रतीत्य; और 'समुत्पाद'। 'प्रतीत्य' का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर और 'समुत्पाद' का अर्थ किसी अन्य वस्तु की उपस्थिति। इस सिद्धांत के अनुसार कोई भी वस्तु न तो शाश्वत है और न पूर्णतया नश्वर ही। बौद्ध दर्शन के अनुसार प्रत्येक वस्तु अपने बाद कुछ-न-कुछ अवश्य छोड़ जाती है। इसलिए किसी वस्तु का पूर्णतया नाश नहीं होता

है। प्रतीत्यसमुत्पाद को मान लेने पर दुःख का भी कारण मानना आवश्यक हो जाता है। बौद्ध-दर्शन में दुःख के कारण में बारह कड़ियों को तीनों कालों के अंतर्गत इस प्रकार रखा जा सकता है-

अतीत काल-	(i) अविद्या
	(ii) संस्कार
वर्त्तमान काल-	(iii) विज्ञान
	(iv) नामरुप
	(v) षडायतन
	(vi) स्पर्श
	(vii) वेदना
	(viii) तृष्णा
	(ix) उपादान
	(x) भव
भविष्य काल-	(xi) जाति
	(xii) जरा-मरण

प्रतीत्यसमुत्पाद को कई नामों से पुकारा जाता है। 'द्वादश निदान', भवचक्र', 'जन्म-मरण चक्र', 'धर्मचक्र' आदि इसके उल्लेखनीय नाम है।

13. सत् तथा जगत की औपनिषदिक अवधरणाओं का अनुसरण करते हुए शंकर त्रिकालाबाधित मूल सत्ता के रूप में ब्रह्म को स्वीकार कर ब्रह्म विवर्तवाद अथवा अद्वैतवाद की स्थापना करते हैं। ब्रह्म को निर्गुण, निराकार, निर्विशेष कहा गया है। यह सजातीय, विजातीय, स्वगत सभी भेदों से परे हैं। यह ज्ञानस्वरूप तथा स्वरूप ज्ञान है। यह ज्ञान का विषय नहीं हो सकता। शुद्ध रूप में यह 'सत्य-ज्ञानं-अनन्तम्' है। चूँकि ये सारे गुणों से परे हैं। अतः इसे 'नेति-नेति' द्वारा भी संबंधित किया जाता है। यह परब्रह्म है। मायोपहित ब्रह्म सगुण, साकार, सविशेष तथा व्यक्तिपूर्ण हो ईश्वर बन जाता है जिसे अपरब्रह्म भी कहा जाता है। ईश्वर के रूप में यह जगत का स्रष्टा, पालनकर्त्ता, संहारकर्त्ता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान आदि अनंत गुणों का धारक है। ये सारे गुण ब्रह्म के 'तटस्थ लक्षण' कहे जाते हैं। ब्रह्म में माया स्थिति है। माया ब्रह्म की शक्ति है परन्तु माया ब्रह्म के स्वरूप को प्रभावित नहीं कर सकती। फिर भी माया द्वारा ब्रह्म पर आवरण डालने से जीव ब्रह्म से भिन्न तथा जगत को सत्य समझ लेता है। ब्रह्म ज्ञान की उत्पत्ति से जीव, ईश्वर तथा जगत भ्रामक हो जाते हैं तथा एकमात्र सच्चिदानंद ब्रह्म की सत्ता ही सत्य रह जाती है।

14. अरस्तु एक दार्शनिक थे। अतः उनका कारणता- संबंधी दृष्टिकोण भी दार्शनिक है। वह किसी घटना के कारण का पता लगाने में 'कैसे' और 'क्यों' का विवेचन करते हैं। कोई घटना 'कैसे' घटी और 'क्यों' घटी, यही पता लगाना उसका कारण जानना है। अतः यहाँ अरस्तु की कारणता संबंधी धारणा में 'कारण' और 'हेतु' दोनों ही धारणाएँ निहित हैं। 'हेतु' अथवा 'क्यों' का संबंध घटना की उत्पत्ति के लक्ष्य या प्रयोजन आदि से रहता है। उनकी मूल समस्या थी- विश्व की उत्पत्ति की व्याख्या प्रस्तुत करना। इसी आधार पर उन्होंने कारणता का भी व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

अरस्तु किसी घटना के लिए चार कारणों को मानते हैं-

(१) उपादान कारण-उदाहरण-मिट्टी की सुराही के उपादान कारण ये हैं- मिट्टी, बालू, पानी इत्यादि।

(२) निमित्त कारण-उदाहरण-सुराही का निमित्त कारण कुम्हार है।

(३) आकारिक कारण-मान लें कि एक बढ़ई है और उसके सम्मुख लकड़ियों का ढेर लगा है। परंतु उसके मन में किसी निश्चित आकार के होने से ही वह इनसे कुर्सी, टेबुल वगैरह कुछ भी बना सकता है। अतः निश्चित आकार रूप ही किसी वस्तु का आकारिक कारण कहलाता है।

(४) प्रयोजन कारण-सुराही या कुर्सी जिस अन्तिम रूप में बनकर तैयार होती है, वही उसका प्रयोजन कारण है। यह एक 'प्रेरक' के रूप में कार्य करता है।

अरस्तु इन कारणों को मुख्यतः दो मौलिक कारणों में अर्न्तभूत कर देते हैं- उपादान कारण तथा आकारिक कारण। अतः अरस्तु इन दो कारणों में भी आकारिक कारण को अत्यधिक मानते हैं।

15. मानसिक पर्यावरण है- मन को उन्नत बनाना। इसकी चंचलता तो इतनी अधिक होती है कि शरीर भले ही एक स्थान पर टिका रहे, मन पूरी दुनिया जहान का चक्कर लगा आता है। मन जब चंचल होता है तो अस्थिर हो जाता है। यह अस्थिरता मन में अनेकों विकार उत्पन्न कर देती है। जहाँ विकार उत्पन्न हो गये वहाँ दूषित प्रवृत्ति तो उत्पन्न होगी ही। मानव मन को वैसे भी छह विकारों से ग्रस्त माना गया है- काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर। ये पाप कर्म मनुष्य को सही मार्ग से भटकाते हैं एवं व्यसनों की ओर ले जाते हैं। हमारा इतिहास इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार मानव ने व्यवसनों के जाल में फँसकर अपने चरित्र का नाश किया है। मानसिकता तो आज के मानव की इतनी अधिक दूषित हो गयी है कि वह अपने-पराये का भेद भी भूल गया है। एक समय ऐसा था कि जब लोग एक-दूसरे से अत्यधिक प्रेम करते थे। परंतु धीरे-धीरे मानव के मन में निःस्वार्थ भावना की जगह स्वार्थ की भावना आ गयी। अपने लाभ के चक्कर में यह भी भूल गया कि अपने लाभ के लिए वह जो काम कर रहा है, वह कहने योग्य है भी या नहीं। अपने भोजन के लिए निरीह- बेजुबान पशुओं-पक्षियों को मारकर मानव भोजन बनाता है। उसके मन में किंचित् भी दया की भावना नहीं उत्पन्न होती।

❑